

एक आना

बीशूबाबू चौक उगलाह अज चोरी...! 'ओह !' हमरा मुँहसँ निकलि गेला मुदा भीतरे भीतर हँसिओ लागल—ई निश्चय मिथ्या थीक चोरके कत्तउ एत्ते धोखा होइ... फराकेसँ ओलतीक उतर रहा बरेरी देखिके चोरके इनदनाइत कोठीक अन्दाज भऽ पकड़इ। फर्स्ट शो भागम-भाग... अहाँक 'मूड' खराब भऽ गेला हएत... इन्टरटेनमेन्ट भऽ जएत...। बीशूबाबू सहानुभूति देखबइत कहलइन। हम मोने मोने गोविन्दके धन्यवाद देलअइक, नहि किछु त' मिथ्यो खरि आनिके एक शो दिनेमाक प्रबन्ध त कऽ देलक।

हाथमे पर्स गोलने, कने हरबरणल-सन मुद्रा बनौने बीशूके सिन्धी होटल लग ठाढ़ देखलिअइन। बुझि पड़ल जेना जलखइ कऽ के बहरएलाइ। बड़ दुःख भेल, ओह एत्ते कालसँ टकटकी लगओने छी आ' भेटबो केला ए'गोटे त' जलखइ केलाक बाद ! मुदा ई गेला कोना, हम त' एक घंटासँ ठाढ़ छी। भरिसक सतीशबा संगे जे गप करए लगलअ तही बीचमे सुट्ट-सन चल गेला। इहो सभ आव बुझि गेलए भरिसक जे हम फोकटमे एकरा सभसँ भीटि-भीटि काज चलओने जाइ छी। सभ दिन कतउ एना चलए। दस-पाँच दिन ने बोलीपर उड़ा सकइ छियइ। मुदा मासक मास जँ एहिना चाहबइ त' कोना हएत ! मुदा बीशूबाबू त' नऽवे फंसलाहे, ई एखन कोनो हालते नहि बुझि सकइ छथिन। आन जँ कहनअ हेतइन त' हमर ई गैवर्डीनक फूलपैन्ट आ क्रेम सोलक नबका जूता हुनका परतारबाक हेतु पर्याप्त अछि। कोनो तरहे हुनका अनकर गपपर विश्वास नबि भेल हेतइन। आ' दोसर हमरासँ ई बहुत नीक जकाँ प्रभावित भेल छथि। रातिओ खन सिनेमासँ घुइ काल हमर 'कमेन्ट' सूनि कहने छलाह—'गंगाबाबू अहाँके माक्सिज्म पर बड़ अध्ययन अइ।' आ' ओह दिन कॉमनरूममे हमरा मुँह 'चोरी-चोरी'क एकटा गीत सूनि बाजल रहथि—'अहाँ जकाँ कॉपी केओ ने कऽ सकइए।' ई एखन दू चारि हप्ता नबि उखड़ता। आ' तावत धरि दोसर

केओ फँसिए जेतइ की। ओह ई सतीशबा महाग 'डोल्ट' अइ। अपने त' चाहो नबि पिओलक आ गपमे बभाकेँ बीशूबला सेहो हुसा' देलक। धुत्त, आइ कोन जतरे बिदा भेल छलउँ से नबि कहि।

ऊँ....बीशू बाबू कतऽ चल गेला। ओह इहो ने 'मार्क' कऽ सकलिअइ जे कोम्हर गेला। संग लागि जइतिअइन त' पानो त' चलितए तावत। आ' नबि किछु त' कमसँ-कम आगूक रस्ता त' साफ कऽ लितहुँ। कऽहुँ केओ भड़का ने दइ।

अनको त' ने देखइ'छिअइ ककरो। साढ़े चारि त' बाजि गेलइ। कओलेजो त' आब 'ओवर' भऽ गेल हेतइ। ओह, अइ भागसँ गेट हटि गेलासँ ई एकटा बड़का क्षति भेल। आब त' ओहो सभ ओम्हरेसँ ओम्हरे दौलतबाक ओइठाँ घोसिया जाइए।

ईह, आब त' ठाढ़ भेल - भेल पएर दुखा गेल। आइ जँ कैबिनेमे केओ जजमान भेटि गेला। आ' नहियो भेटता त' की हेतइ, छऽ टा' पाइ त' अपनहुँ संगमे अछिए—चाय पी लेब। पिबतो रहब आ' 'वेटो' करबइन, जऽ केओ चल आवथि तावत। नबि, चाय नबि ठीक हएत। अइसँ त' नीक आधा प्लेट पकौड़ी आ तकरा बाद एकटा 'सीजर'। हँ, सएह नीक हएत। मुदा सिगरेट पहिनबि कीनि ली। होटलसँ मझाएब त' की कहत जे 'विलो स्टन्डार्ड का आदमी है, सीजर पीता है।'

ओ की अवइ छइ?... 'व्यूटी बॉक्स'।...धुत्त, 'घास बॉक्स'। अइ बसमे एकोटा नीक छउँड़ी नबि स्कूल जाइ छइ। आ' जाइतो जऽ छइ त' हमर 'मूडे' एखन तेहेन नबि अछि जे आँखि जुराएब। पहिने पेट जुराएल रहइ छइ तखनबि आँखियो जुरावामे मोन लगइ छइ। ओह, भूखो कत्ते लगइ छइ लोक के। बारहे बजे त' खेने रही दू-टा बिस्कुट लक्ष्मीबाबूक दोकानमे। केहन स्वादिष्ट रहइ। आ' ओ एजेन्टबो बड़ नीक लोक छल—एकटा बोलीमे दू टा खाइ लए दऽ देलक—'टेस्ट' करइ ले। हुँह, 'टेस्ट' करइ ले...ओ की जानए गेलइक जे ओहोसँ हम भोजनोक काज चला लेबइन। ओहि परसँ तीन गिलास पानि दऽ देलिअइन आ' संयोगसँ ललित भाइ भेटि गेल त' दू खिल्ली पानो खुआ' देलक। एखन धरि मस्त रही। मुदा आब त' बेश जँकाँ भूख बूझि पड़इए। धुत्त, जाइ छी—'व्यूटी बॉक्स' सेहो पास कऽ

गेलइ, कोनो तरहक 'फीलिंग' नबि भेल । किसुनबाबू जऽ अन्तर्देशीय पत्र मङ्गता त कहबइन कमीज जेबीमे भूर छलइ छबो टा' पाइ खइसि पड़ल । वा कोनो आने लाथ लगा देबइन ।

सिगरेट कीनि होटल गेलउँ । बहादुरके आधा प्लेट पकौड़ी आनऽ चुपचाप कहि देलअइ । हाबि-हाबि खतम केलउँ जे केओ देख ने लिए । सिगरेट लेसबा लए जहाँ सलाइ खररलउँ कि एकाएक पाछूसँ बोशूबाबू टोकलइन— 'एकटा' एम्हरो बढ़ाएब गंगाबाबू जँऽ 'एक्सट्रा' रहए तऽ... तऽ कि बीशूबाबू तखनइ भीतरे आवि रहल छलाह । ओह बड्ड पइघ हुसान हुसलऊँ ।

'ओह, 'सौरी'...एकटा' अइ...अच्छा की हेतइ एहीमे काज चला लेब... 'फिफ्टी-फिफ्टी ..' 'से किए...एकटा' आओर मङ्गा लइ छी ।' बीशूबाबू हमरे देबुल लग बइसइति बजलाह आ' बहादुरके कहलखोन—'एक कैप्सटन ।' फेर हमरा कहलइन—'हम 'वेट' करइत रही अहाँ लए-एसकर जलपान करइमे नबि मोन लगाइ छइ...मुदा आइ अहाँकेँ देरी भऽ गेल ।...'

'.....विभूति बाबू चल आएल छला डेरापर...तबे देरी भए गेल... हुनकासँ मोपासँक 'स्टोरी'पर 'डिस्कसन' भऽ गेल छल...विभूतिबाबूक कहानी त' अवश्य पढ़ेहएब एकोटा...कि नबि ?'

'आहि...कएकटा...अपूर्व लिखइत छथि...हुनकासँ अहाँके परिचय अछि ? 'परिचय की अइ ठेहुन-छाबा अइ...कइएक दिन डेरापर आविकेँ 'बोर' करइ छथि । हमर एक टा 'स्टोरी...'

बीचहिमे गोविन्द चल अरल आ' अबतबि कहलक—हउ तोरा ओइठौँ चोरी भऽ गेलउए...तोरे पित्ती भेटल छला सहए कहइ छला...'

बीशूबाबू चौंकि उठलाह—'अबे चोरी...?' 'ओह !' हमरा मुहसँ निकाल गेल मुदा भीतरे - भीतर हँसिओ लागल—ई निश्चय मिथ्या थीक, चोर के कत्तए एते धाखा होइ...फराकेसँ ओलतीक उजरलहा बरेरी देखिके चोर के ढनढनाइत कोठीक अन्दाज भऽ सकइछइ । फर्स्ट शो 'भागम-भाग'... अहाँक मूड खराब भऽ गेल हएत... 'इन्टरटेनमेन्ट' भऽ जएत... । बीशूबाबू सहानुभूति देखबइत कहलइन । हम मोने-मोन गोविन्दकेँ धन्यवाद देलिअइक, नहि किछु त' मिथ्यो खबरि आनिके एक शो सिनेमाक प्रबन्ध त' कऽ देलक ।

'ऐ कितना हुआ...इनका भी कहो ।' बीशूबाबू बहादुरसँ पुछलखिन आ' हम अपन 'एक आना सूनि लगघी करऽ चल गेलउँ ।

एक आना

बीशूबाबू चौक उगलाह अज चोरी...! 'ओह !' हमरा मुँहसँ निकलि गेल मुदा भीतरे भीतर हँसिओ लागल—ई निश्चय मिथ्या थीक चोरके कतउ एत्ते धोखा होइ... फराकेसँ ओलतेक उतरहा बरेरो देखिके चोरके दनदनाइत कोठीक अन्दाज भऽ पकड़इ। फर्स्ट शो भागम-भाग'...अहाँक 'मूड' खराब भऽ गेल हएत... इन्टरटेनमेन्ट भऽ जएत...। बीशूबाबू सहानुभूति देखबइत कहलइन। हम मोने मोने गोविन्दके धन्यवाद देनिअइक, नहि किछु त' मिथ्यो खबरि आनिके एक शो दिनेमाक प्रबन्ध त कऽ देलक।

हाथमे पर्स ओलने, कने हरबरणल-सन मुद्रा बनौने बीशूकेँ सिन्धी होटल लग ठाढ़ देखलिअइन। बुझि पड़ल जेना जलखइ कऽ के बहरएलाहे। बड़ दुःख भेल, ओह एत्ते कालसँ टकटकी लगओने छी आ' भेटबो केला ए'गोटे त' जलखइ केलाक बाद ! मुदा ई गेला कोना, हम त' एक घंटासँ ठाढ़ छी। भरिसक सतीशबा संगे जे गप करए लगलऊँ तही बीचमे सुट्ट-सन चल गेला। इहो सभ आव बुझि गेलए भरिसक जे हम फोकटमे एकरा सभसँ भीटि-भीटि काज चलओने जाइ छी। सभ दिन कतउ एना चलए। दस-पाँच दिन ने बोलीपर उड़ा सकइ छियइ, मुदा मासक मास जँ एहिना चाहबइ त' कोना हएत ! मुदा बीशूबाबू त' नऽवे फंसलाहे, ई एखन कोनो हालते नहि बूझि सकइ छथिन। आन जँ कहनउँ हेतइन त' हमर ई गैवर्डीनक फूलपैन्ट आ क्रेम सोलक नबका जूत हुनका परतारबाक हेतु पर्याप्त अछि। कोनो तरहे हुनका अनकर गपपर विश्वास नबि भेल हेतइन। आ' दोसर हमरासँ ई बहुत नीक जकाँ प्रभावित भेल छथि। रातिओ खन सिनेमासँ घुइ काल हमर 'कमेन्ट' सूनि कहने छलाह—'गंगाबाबू अहाँके माक्सिज्म पर बड़ अध्ययन अइ।' आ' ओह दिन कॉमनरूममे हमरा मुहँ 'चोरी-चोरी'क एकटा गीत सूनि बाजल रहथि—'अहाँ जकाँ कॉपी केओ ने कऽ सकइए।' ई एखन दू चारि हप्ता नबि उखड़ता। आ' तावत् धरि दोसर

केओ फँसिए जेतइ की। ओह ई सतीशया महाग 'होल्ड' अइ। अपने त' चाहो नबि पिओलक आ गपमे बभाकेँ बीशूबला सेहो हुसा' देलक। धुत्त, आइ कोन जतरे बिदा भेल छलउँ से नबि कहि।

ऊँ.....बीशू बाबू कतऽ चल गेला। ओह इहो ने 'मार्क' कऽ सकलिअइ जे कोम्हर गेला। संग लागि जइतिअइन त' पानो त' चलितए तावत। आ' नबि किछु त' कमसँ-कम आगूक रस्ता त' साफ कऽ लितहुँ। कऽहुँ केओ भड़का ने दइ।

अनको त' ने देखइ'छिअइ ककरो। साढ़े चारि त' बाजि गेलइ। कओलेजो त' आव 'ओवर' भऽ गेल हेतइ। ओह, अइ भागसँ गेट हटि गेलासँ ई एकटा बड़का क्षति भेल। आव त' ओहो सभ ओम्हरेसँ ओम्हरे दौलतबाक ओइठाँ घोसिया जाइए।

ईह, आव त' ठाढ़ भेल - भेल पएर दुखा गेल। आइ जँ कैबिनेमे केओ जजमान भेटि गेला। आ' नहिबो भेटता त' की हेतइ, छऽ टा' पाइ त' अपनहुँ संगमे अछिए—चाय पी लेब। पिबतो रहब आ' 'वेटो' करबइन, जऽ केओ चल आवथि तावत। नबि, चाय नबि ठीक हएत। अइसँ त' नीक आधा प्लेट पकौड़ी आ तकरा बाद एकटा 'सीजर'। हँ, सएह नीक हएत। एदा सिगरेट पहिनबि कीनि ली। होटलसँ मझाएब त' की कहत जे 'विलो स्टन्डार्ड का आदमी है, सीजर पीता है।'

ओ की अबइ छइ?... 'ब्यूटी बॉक्स'।...धुत्त, 'घास बॉक्स'। अइ बसमे एकोटा नीक छउँड़ी नबि स्कूल जाइ दइ। आ' जाइतो जऽ छइ त' हमर 'मूडे' एखन तेहेन नबि अछि जे आँखि जुराएब। पहिने पेट जुराएल रहइ छइ तखनबि आँखियो जुरावामे मोन लगइ छइ। ओह, भूखो कत्ते लगइ छइ लोक के। बारहे बजे त' खेने रही दू-टा बिस्कुट लक्ष्मीबाबूक दोकानमे। केहन स्वादिष्ट रहइ। आ' ओ एजेन्टबो बड़ नीक लोक छल—एकैटा बोलीमे दू टा खाइ लए दऽ देलक—'टेस्ट' करइ ले। हुँह, 'टेस्ट' करइ ले...ओ की जानए गेलइक जे ओहीसँ हम भोजनोक काज चला लेबइन। ओहि परसँ तीन गिलास पानि दऽ देलिअइन आ' संयोगसँ ललित भाइ भेटि गेल त' दू खिल्ली पानो खुआ' देलक। एखन धरि मस्त रही। एदा आव त' बेश जँकाँ भूख बूमि पड़इए। धुत्त, जाइ छी—'ब्यूटी बॉक्स' सेहो पास कऽ

गेलइ, कोनो तरहक 'फीलिंग' नबि भेल । किसुनबाबू जऽ अन्तर्देशीय पत्र मङ्गता त कहबइन कमीज जेबीमे भूर छलइ छबो टा' पाइ खइति पड़ल । वा कोनो आने लाथ लगा देबइन ।

सिगरेट कीनि होटल गेलउँ । बहादुरके आधा प्लेट पकौड़ी आनऽ चुपचाप कहि देलअइ । हाबि-हाबि खतम केलउँ जे केश्रो देख ने लिए । सिगरेट लेसबा लए जहाँ सलाइ खररलउँ कि एकाएक पाछूसँ बीशूबाबू टोकलइन— 'एकटा' एम्हरो बढ़ाएब गंगाबाबू जँऽ 'एक्सट्रा' रहए तऽ...' तऽ कि बीशूबाबू तखनइ भीतरे आबि रहल छलाह । ओह बड्ड पइघ हुसान हुसलउँ ।

'ओह, 'सौरी'...एकटा' अइ...अच्छा की हेतइ एहीमे काज चला लेब... 'फिफ्टी-फिफ्टी ..' 'से किए...एकटा' आओर मङ्गा लइ छी ।' बीशूबाबू हमरे टेबुल लग बइसइति बजलाह आ' बहादुरके कहलखोन—'एक कैप्सटन।' फेर हमरा कहलइन—'हम 'वेट' करइत रही अहाँ लए-एसकर जलपान करइमे नबि मोन लगाइ छइ...मुदा आइ अहाँकेँ देरी भऽ गेल ।...'

'.....विभूति बाबू चल आएल छला डेरापर...तबे देरी भए गेल... हुनूकेसँ मोपासँक 'स्टोरी'पर 'डिसकसन' भऽ गेल छल...विभूतिबाबू कहानी त' अवश्य पढ़े हएब एकोटा...कि नबि ?'

'आहि...कएकटा...अपूर्व लिखइत छथि...हुनकासँ अहाँके परिचय अछि ? 'परिचय की अइ ठेहुन-छाबा अइ...कइएक दिन डेरापर आबिकेँ 'बोर' करइ छथि । हमर एक टा 'स्टोरी...'

बीचहिमे गोविन्द चल अरल आ' अबतबि कहलक—'हउ तोरा ओइठाँ चोरी भऽ गेलउए...तोरे पित्ती भेटल छला सहए कहइ छला...'

बीशूबाबू चौंकि उठलाह—'अबे चोरी...?' 'ओह !' हमरा मुहसँ निकाल गेल मुदा भीतरे - भीतर हँसिओ लागल—ई निश्चय मिथ्या थीक, चोर के कत्तउ एत्ते धाखा होइ...फराकेसँ ओलतीक उजरलहा बरेरी देखिके चार के ढनढनाइत कोठीक अन्दाज भऽ सकइछइ । फर्स्ट शो 'भागम-भाग'... अहाँक मूड खराब भऽ गेल हएत... 'इन्टरटेनमेन्ट' भऽ जएत... । बीशूबाबू सहानुभूति देखबइत कहलइन । हम मोने-मोन गोविन्दकेँ धन्यवाद देलिअइक, नहि किछु त' मिथ्यो खबरि आनिके एक शो सिनेमाक प्रबन्ध त' कऽ देलक ।

'ऐ कितना हुआ...इनका भी कहो ।' बीशूबाबू बहादुरसँ पुछलखिन आ' हम अपन 'एक आना सूनि लग्गी करऽ चल गेलउँ ।

काशक फूल

● ●
एक क्षण पूर्व जतए मैथिल संस्कृतिक पालन पोषण ओ संवर्द्धन
होइत छल ततहि आब एक बड़का मोनि फोड़ि देने छलैक । सम्पूर्ण
गोदिया टोल एक मोदलि गेल छल जतए अनन्त पानि अबाध
रूपमे चक्कर काटि अपन रांभीरता ओ भयंकरताक परिचय दैत छल
ततए बड़ भयोत्सादक दृश्य छल । पूरा गोद टोला कटि गेल छल ।

● ●

आइस तीस बरख पूर्व एतए हरिअरी व्याप्त रहै छल । ऋतुक परिवर्तन भेलासँ
फसिल परिवर्तित होइत छल । दुपहरियामे जखन किरण पश्चिम दिश
होइत छलैक सुकुमारि युगतोगण लग पासक टोलसँ सिक्कीक बनल डाली,
मौनी ओ पनपथियामे साग तोड़बाक हेतु छेतमे निकलि जाइत छलि । तहि
समयक खेसारी, मटर आ बथुआ सागक हेतु ओहि युवती सबहिक नव
भाउजि सभक मोन पनिछइत छलैक । दाढ़ी पकड़ि, गालमे चटकन मारि,
जुट्टी गूथि देबाक प्रलोभन दए, आर अंतमे सासुसँ कहि देबाक धमकी
देखाए ओ सभ अपन ननदि कए फुसिआइ-पनिआइ लइ छलि । सागसँ
भरल सिक्कीक पनपथिया लए भयभीत नेत्रें, सशंकित हृदयें, चकित हरिणीक
सदृश जखन ओ पुनि अपन भाउजिसँ मिलै छलि तें वहिओ ओ रखबारक
निर्मम उलहन-उपरागक कथा, कहियो पुवरिया बाधसँ सुगर उठबाक
कथा, बड़े भयभीत स्वरें कहै छलि । ओकर भाउजि सबअहिकेँ नहि पतिआए
उल्टे ओकर अकारण भयभीत भए गेलापर खिखियाए उठै छलि । सम्पूर्ण
प्रदेस एहने स्वर्गीय वातावरणसँ भरल रहै छल ।

किन्तु तीस वर्ष पश्चात् आइ ओ स्वर्गीय वातावरण कतएसँ पाबी ? आब ने
ओ खेत ने पथार । जमीन-जाल पानिमे चपोडंड । कौशिकीक कथा करुणाक
कथा भए गेल अछि । यद्यपि आबहु ओहि सरस जीवनक दर्शन भेटैछ
किन्तु ओहिके रससिक्त करबाक तत्त्वक महा-अभाव ।

एक समय हमर मस्तिष्कमे मिथिलाक जन-जीवन रस-प्लावित, उपर्युक्त मधुमय वातावरण मध्य छिड़िआएल लोक गीतक संग्रहक आकाँक्षा छल । ओहि गीतक जाहिमे बिहुला, सलहेश ओ लोरिक अइसन नायक-नायिकाक वर्णन मिथिलाक गाछी-गाछी, सोनाक किरणमे डूबल खेत-खेतमे, हरिअरी संग गंगा-यूनाक धार बहबैमे समर्थ भ' सकै अछि ।

गोढ़ियाक टोल, कोशीक उडंड बाढ़िसँ भरल चरक मध्यमे छलैक । पुरवा सांय-सांय करैत छल । वायु ओ पानिक युद्ध छलैक । घर—घर तँ छलैहे नहि जे पानि के सहारा भेटितइ । से धौल उठि रहल छल ! नगदा तेजापर छल । चिटकुट देखि बैचाक (नाबिक) हताश उड़ैत छलैक । आ' ओ एकांतवासी भूमि खड दुइ-चारि गाढ़केँ लए वायु ओ लहारसँ अनवरत युद्ध कए रहल छल ।

अहा टोलपर हमर काज सधिते-सोमन मुखियासँ । सोमन मुखियाक नाम खूब छैक अहि इलाकामे । सकुरीमे गीत गवैत काल ओकर फोटो खिचल गेल छलैक । कहबी तेँ इहो छैक जे सपनहिमे ओकरा सबटा 'महराय' याद भ' गेल छलैक : सपनौती विद्याके चरितार्थ हाइत देखत ।

पुरवासँ सांय-सांय करैत आकाशक नीचा खुला जल बसातमे ओइ एक कोसक परोपट्टामे जन-रिक्त वातावरणसँ हम घिरल छलहुँ । दस-पाँच टा गोढ़ि-टेलह मध्य सितलपाटोपर बैसल । माछी भिन-भिन करै छलैक । अपने एहन अवस्थामे कखनहुँ ई आशा जुनि करो जे तुरते अहाँ केओ गीत लिखा-इए देत आ साइकिल उठाए अहाँ भागि जाएब । सोमन मुखिया तीन-चारि आन व्यक्तिक संग आएल । चारि-छः टा पोस्टकार्डक संगे ।

'अच्छा, बडआ कने एकरा पढ़ि दिअौक तँ ।' पोस्ट-आफिसक एक मास पूर्वक मोहर दैल पोस्टकार्ड दिशि ओ हमर ध्यान गड़त । एक मासक समाचार ओकरा सबहिक हेतु गवे छैक । एहि वैज्ञानिक युगक शीघ्रतासँ अपरिवित ई मानव वर्ग जे अपन देहातमे निवास करैछ एकर गीत कते प्राकृतिक हेतैक । ओह !

तेकर पश्चात् दुइ-तीनटा पोस्टकार्ड आर पढ़ए पड़ल । सबने टाकाक चर्च, मातृभूमि लौटबाक मनोकान्ता, ध्वंशिनी कोशीक निर्मम चोटक जिज्ञासा । पश्चात् कमलकेँ जनजीवनक दुखक अनुभव कराबर पड़ल ।

विना नाओक कोना काज चलत, अस्सी टाका चाही । धोती नइ, साड़ी नइ । कर्जक चर्च, रिलीफक कष्ट, बीमारीक वर्णन आ कते की की ? एते लिखबाक पश्चात् हम पुछलियैक—आर की लिखबैक ? सोमन मुखियाक पित्ती तभाकू गिलोठिके ठोर धोकचाबैत बाजल—लिखबामे की फस्ट छथि, केहेन निम्ननस सबटा लिखि देलथिन्ह हैं । ‘किन्तु हमर ध्यान अहिपर कहाँ छल । हम तँ टटघरक कोनटासँ तकैत आँखिमें करुणाक संसार बसौने एक नारीकेँ देखि रहल छलहुँ । जे हमरा दिशि निनिमेष दृष्टिए अपन नग्नता, विवशता ओ दरिद्रताकेँ ओइ चीठीमे गाथि देबा लए कहि रहल छल । हमर आन्तरिक हृदय अइकेँ कबूल करलक । एक विरहिणोक एते सुन्दर कथा अहिसँ पूर्व देखबाक हमरा अवसर नहि भेटल छल ।

एकटा बूढ़ि हमर ध्यान तोड़लन्हि । हुनक बातकेँ लिखि देबाक पश्चात् ओहिपर पता - निशान टीपि हम पत्र द देलिअक । हम अपन काज कए विदा भए गेलहुँ । किन्तु ओ दुइ करुणा-प्लावित नेत्र आइ धरि हमर हृदयमे एकटा मार्मिक चित्र—कातिक पूर्णिमाक ठहकैत इजोरियाक चमकत अरिपनक केरा गाछ तर बंसल नारीक चित्र जकाँ बनि गेल अछि ।

संध्या कालक सूर्य डूबि रहल छल आर हमर बैचा. (खेबैया) नगदाक प्रति-कूल नाव बढेने चलि जाइत रहल । ओकरहु आँखिमे संध्या-जन्य आशा ओ अभावक मिश्रण छलैक ।

हम अपन गाम आवि गेलहुँ । ओ गोढ़िक टोल दुइ कोसपर अवस्थित अछि हमरा गामसँ । तेकर दुइ दिनक बाद भैयाक संगे चिड़ैक शिकारमे गेलहुँ । चिरंजीव धारक भडक पर सोमनाकेँ देखने छलियैक प्रकृतिक एकांत अंचलमे ढांगमे तीतल जोलही गमछी लपेटने हाथमे सहथ उसाहने छल । ओहि एकाकी ठुट्ट गाछ तर संध्याकाल । नावक मांगिपर ठाढ़ एक मूर्ति सदृश बुझना जाइत छल । ने कोनो भाव ने कोनो भंगिमा । पृष्ठभूमिमे छलैक स्थिर पानिक घास, लीध ओ हरिअर केचुलीक संग श्वेत, रक्त ओ नील कमल ओ केचुलीक फूल । एहेन गहन तपस्या अइसँ पूर्व देखबामे नहि आपल छल ।

सोमना सबा सोलहो आना मैथिल थिक । कोना कहू की पहिरै अछि आ कि खाइये । नगनता ओकर ओढ़ब थिकैक ओ गलाक करिआ तागमे गांथल जंतर ओकर पहिरब । चूड़ा कुटवाक व्यवसाय नहि चलै छै । धान नहि हेतैक तेँ चूड़ा कतएसँ हो । नहि तेँ चूड़ा आ माछ—मैथिल संस्कृतिक प्रतीक आ तेकर ओ उत्पादक ।

पानि घटैत छैक । कोशी कातमे पानिक घटब आ बढ़ब एक प्रमुख लेखा-जोखाक विषय थिक । अइ पानिमे पानि बड़ घटि गेलैक । माछ पटापट मरै लागल । थैहरि-थैहरि मचि गेल । हाट आव भरना पर लागैये । ओहि सप्ताहमे जगतक भगड़ा बुधनीसँ भेल । बुधनीक जंजाल गाए जगतक बाड़ीमे पैसि तरकारी खाए नेने छलन्हि । बुढ़िया कलकुपरी मरल छल । जबानमे रामरुप भुतसप्पाक कारण स्वर्गीय भ' गेल छल । तखन एते घटनाक बात ई हाट आएल छल । कोनो काज छल नहि सितवाक नाव पर चढ़ि भरना पर चलि गेलहुँ । पान खेलहुँ । ग्रामसेवकँ गप्प भेल । घुमैत घामैत माछ जेमहर बिकाइत छलै अम्हरे पएर बढ़ि गेल । देखलहुँ गोढ़िया टोलक ओही चमकैत दुइ नेत्रकें । किछु मोन परि आएल ।

‘माछ नहि लेवैक ?’ कतहुसँ शब्द आएल ।

‘कोना दै छीही ?’

‘हमर भा’ कोन ?’

‘अच्छा तौल तीन सेर ।’ ओ कच्ची तीन सेर सिंगही तौल देलक । हम थोड़ेक केंचा बढ़ाए देलियैक । मकइक पात (धान सपना भ' गेल ते लार कतए पावी) मे बान्हल माछ ल'के चलए लगलहुँ तँ किछु मोन पड़ि आएल पुछलियै—‘हँ, बंगालासँ चीठी पुरजी कोनो आएलहु कि नहि ।’

ओ किछु लजाइत बाजलि, ‘कहाँ एलैहे कोनो ?’

हम ‘अच्छा’ कहि आगू बढ़ि गेलहुँ । ‘कहाँ एलैहें कोनो’क गूढ़ अर्थ निकालैमे हमर मगजक गुद्दी दुखाए लागल ।

दिन बितैत गेल जेना कोशी कातक दिन बितै छै । गामक जनसंख्या कते कमि गेलैक अछि ? दलानक चौकी पर कुत्ता बैसि मनुष्यक अभावक पूर्ति करैछ । इम्हर रिलीफक किछु चर्च चलल छलैक । गाम-गाममे अनाज बटबारा

भए चुकल छलैक । छिप्टी साहेब (अंचलाधिकारी) गाम-गाम घुमताह । लोककेँ घर खरसीक टाका देखिन्ह । कपड़ा देखिन्ह । किन्तु अभावक पूर्ति कहाँ भेलैक ? चिर बुभुक्षितकेँ रोटीक एक कोन देने कहाँ काज चलै छैक । एक बरख पश्चात् पुनि गाम गेलहुँ । किन्तु एहि बेरिक एकटा समाचार हृदयक भावुक श्रोतकेँ सुखा देलक । ओना तेँ कोशीक एहन अनेक व्यापार । किन्तु एहि घटनाक अपन एकटा अलग अस्तित्व छैक । कोशी-पीड़ित मिथिलाक किछु कलात्मक चित्र एक गोठ प्रसिद्ध समाहिमे देवाक छल । मोनमे विचारने छलहुँ कोशीक लोकक अनेक मनोरम चित्र खींचव । किन्तु अइ घटनाक बाद जइ जन-जीवनसँ हमरा अनुराग भए गेल छल, एकदम विरक्ति भए गेल । कोशीक ताल-क्रोधकेँ आर बढ़ा देलक । हम भावनामे आवि हाथक कैमरा श्रीपति धारक बड़का मोनिमे फेंकि देने छलहुँ । आर दोसरे दिन शहरक हेतु विदा भए गेलहुँ । कोशीक एहेन नृशंसता पर मानवता लज्जित भए जा सकै छल । अइ घटनामे जातिक नव-परम्पराक विनाश समाहित छल । तखन हम सोचए लगलहुँ कोशीक अमानवीय-व्यवहारकेँ रोकवाक हेतु कैगोट मानवताक समर्थक शक्ति तत्पर अछि ? किन्तु उत्तर नहि भेटल आ मोन ओही मोनिक पानिक सदृश चक्कर लगबए लागल ।

परुकाँ हमरा गेलाक थोड़वे दिन पश्चात् सोमनाक पुत्र बंगालसँ आएलैक । अपन पत्नी ले बहुत किछु अनने छल । ई खबरि बूझि भावनाक एक हिल-कोर आएल । बड़ मनोरम, बड़ पवित्र, बड़ आशामय—जे भेटल छल भरना परक हाटक ओ गोढ़ि टोलक दुइ विप्लव नेत्रमे । ओइमे कते हर्षोन्मत्तता आएल हेतैक । किन्तु कल्पना नहि कए सकलहुँ जखन अगुलका समाचार बुझलहुँ । गोढ़ि टोलक चारू वात आंतर-पांतरमे बहुत दूर-दूर तक धार बहै छलैक । ई टोल अति सर्दिआह जानि सुमानिमे कखनो-कखनो ठेहुन धरि पएर धस-धसाए जाइत छल । नारि बड़ पिलपिलाह रहै । सोमना बंगाल अखन तक अही दुआरे नहि गेल कारण अपन आँखिसँ नव ज्ञात सन्ततिक सनेश निवारिकेँ जाइतै । आशाक संग उमंगमे नचैत नोकरी पर जाइतै । किन्तु सोचलाहा भेलैक कहाँ ?

दस दिनसँ भीषण बरखा भै रहल छलैक । अन्धर पानिक भटका अपूर्व रंग-
ताल लगबै छल । मेघ कहै आइ छाड़ि काहि हम नहि बरिसब । नीचुलका
दुइ मर्द पानि उपरक पानिक सहर्ष स्वागत कए रहल छल । चिरै-चुनमुनी
पेटकान लधने छल । गोढ़िया टोलक माटिक हृदय हहरैत छलैक । अजेय
शत्रुसँ जे पाला पड़ल छलैक ? आओर ठीक अही समय सोमनाक नातिक
मुंह देखबाक सौभाग्य छलैक । दुपहरियासँ जे भहरै लगलै से भहरितै गेलैक
लोकक मोनमे जे एक आशा सांभूपहर बुनछेक होइके छलै से निष्फल भ'
गेलै । दिनक प्रकाश ओ रात्रिक अंधकारमे किछु अन्तर नहि रहि गेलैक
बिजलीसे रहि-रहि चमकै । हाथके हाथ नहि सुझैत छलैक कि अही समय
सोमनाक घरक एक-एक कोड़ो कड़कड़लै । एक भारी बम-गोला मोखिलग
फुटलै । एक भारी धसना हरहरा के खसल । आर फेर पूर्ववत् निःशब्दता !

एक क्षण पूर्व जतए मैथिल संस्कृतिक पालन पोषण ओ संवर्द्धन होइत छल
ततहि आव एक बड़का मोका फोड़ि देने छलैक । सम्पूर्ण गोढ़िया टोल एक
मोनिमे बदलि गेल छल । जतए अनन्त पानि अबोध रुपमे चक्कर काटि
अपन गंभीरता ओ भयंकरताक परिचय दैत छल ततए बड़ भयोत्पादक दृश्य
छल । पूरा गोढ़ि टोला कटि गेल छल ।

भोरमे किछु जखन उवेर भेलैक तँ अगुलका गाँवक लोक एक पुरुष और
एक नारीक टटघरक चार पर सहारा पौने भसिआइत देखलकै । चार
मध्य एक नवजात शिशु खूब खिलखिलाइत अपन पिता ओ माएकेँ
आह्लादित करैत कोनो सुरक्षित स्थानमे बहल चलि जाइत छल !

ककर साहस छलैक जे ओहि उन्मत्त बाढ़िसँ ओहि परिवारकेँ छानिकेँ
आनए । ओ सभ बहल जाइत छल आर कछेरक श्वेत, कोमल ओ सुन्दर
काशाक फूल हवाक साथ हिलौर लैत छल । एकरा लेखे अपन धन सन ।

लीली

आँखि एतवेमे खुजि गेल, देखल नोरक टघार गाल पर द फ वहि रहल अछि । कंठ सुखायल एवं हमर हाथ दूनू गेड़आ के कसि-
औने दुरुखासँ लालभौजी मुस्कुगाइत डाँटि रहलि छलाह—कहिया
ज्ञान-प्रदान हैत अहाँकै ? कतेक बेरि कहलहुँ जे हाथ पएर धो क
सूतू परन्तु के मनैयै हमर बात ?

की बजितहुँ हम ? हड़बड़ाक उठलहुँ त देखैत छी 'फाइड'
(Freud) क Interpretation of Dreams क किछु
पन्ना उनटल एव मोड़ाएल—जेना एकर अर्थ कहि रहल हो—
ई स्वप्न नहि अपूर्ति इच्छा ।

हॉलसँ बहारे भेल रही की पाछूसँ टोकलक ओ—सर आपनी एकद
सुनवेन !

क्रमशः माथ ठनकल । ई के अपरिचिता ? एतबा त अवश्ये जे कोनो छात्रा
थीक किन्तु हम मोन नहि पाड़ि सकलहुँ जे कोन वर्गमे एकरा पढ़ैत देखने
छियैक एवं कोना हमरासँ ई परिचय प्राप्त करबाक साहस केने अछि । तथापि
सम्यतावश हम ओकरा दीसि देखि बजलहुँ—बोलुन की काज ?

आज के आपनी जे बोलेछेन क्लासेर मध्ये, से सभ आमार भोलो लागलौं
ना ।—ई कहि ओकर मुँह रक्ताभ भय गेलैक । लाजें ओकर मुँहसँ लगाइत
कनपट्टी तक लाले-लाल भय गेल छलैक ।

हम स्मरण नहि क सकलहुँ जे कोन वर्ग में हम की बजलहुँ जे ककरो कोनो
'ओबजेक्शन' होइक । तथापि मोने-मोन सोचल—नया-नया लेक्चरर भय
क आएल छी, कतहु बहकि गेल हैब । प्रायः तैं बेश नम्र भयक (जेना हमहीं
ओकर छात्र होइयैक) बजलहुँ—आमार कोन कथा नियो आपनी एतो
आघात पेये छेने ? एतबा कहि हम शीघ्रतासँ पिंड छोड़यबाक कारणे एम्हर-
ओम्हर ताकय लागलहुँ । एतबहि कालमे त कतेको छात्रगण हमरा सभ
दिस ताकि मुसकिया रहल छल—जेना हम सभ कोनो एहन कार्य क रहल

होइक जे सभ्यताक विरुद्ध हो । तैं बात के शीघ्रतासँ समाप्त करवाक प्रयासैं हम कहलियैक—आमी आपनार काछे खमा चाई । एतवा कहि हम डेग बढ़यवाक प्रयास करिते रही की ओ चट्ट द बाजलि—सर, एई सवेरे डिशक-नेर जन्ने किछु समय चाई कबे दिच्छेन ? हम शीघ्रतासँ अपन जान छोड़्य-बाक कारणे जल्दीसँ कहलियैक—काल के आपनार काछे आसबो गोटा चार टा समय बारो कोथाय ?

३६ न्यू एरिया कदम [कुँआँ, सर । वेश आपनार जन्ने अपेखा कोरबो । कहैत बिदा भेलि 'छात्रागणक कोठरी' दिश एवं हम नम्हर-नम्हर डेग देल कोठरी नं० १४ कँ जाहि ठाम हमरा लेल प्रायः गोटेक गोड़हि बटुकगण बाट ताकि रहल छलाह ।

पश्चात कतेको हम ओकरा ओहिठाम गेलहुँ । कतेको गप्प कैल । ओकरा माय [एक अवकाशप्राप्त लेडी डाक्टर, पिता सम्भ्रान्त परिवारक सदस्य होयवाक कारणे स्वतंत्र पेशा 'बैरिस्टरी' करैत । साहित्य, संगीत एवं कलासँ विशेष प्रेम-एवं तकरे साक्षात प्रतिमूर्ति छलि बो । नामो पाछू जनलहुँ—छोट होइतो वेश 'गम्हीर' रहैक 'लीली' ।

परिचय भेल एक छात्राकेँ साहित्यक एक प्रोफेसरसँ । किंतु घनिष्ठताक आघात पावि बाहरी आवरण धोखड़य लागल एवं रहि गेल 'सत्य' रूप—एकटा युवक एवं युवती ।' कालक प्रगतिक संगति हमरो लोकनिक कार्यक्रम क्रमशः प्रगतिए कय रहल छल । एखन धरि चोरा-नुका क वर्ग-भवनमे धोखा धोखी बेरि दृष्टि-विनि-मयसँ संतुष्ट भय जाइत छलहुँ—एवं ततवे बहुत छल । भरि राति जगवाक सामग्री !! किन्तु आपसक आन्तरिकता हमरा सभकँ एतेक बोल्ड (Bold) बना देलक जे आव हमरा लोकनि कतहु ठाढ़े ठाढ़, बैसि, पुष्पकालय, कोरा-ईडर कैफे अथवा क्रिकेट ग्राउन्डमे वेधड़क गप्प क लैत छलहुँ ।

शनि दिन जखन हम 'क्लास' लऽ कऽ 'लीजर' बितयवाक उद्देश्ये पुस्तकालयमे आवि, रिडिंग रूममे बैसि 'काव्यालोचन' उन्टवैत रही कि, पाछूसँ खिल-खिलाहट स्वर ऐल—'कनग्रचुलेशन्स' माई हार्टी कनग्रचुलेशन्स ! घूमि क पाछू तकलहुँ त देखैत छी पुस्तक तकवाक लाथें ओ लग आवि खिलखिला रहल अछि, जेना भिस्सी पड़िते-पड़िते मुसलाधार वर्षा प्रारम्भ भय गेल होइक ।

हम पुछलियैक-कथोक हमरा बधाइ देल अछि । त कहलक जे अपने 'रोइंग-क्लब' क सभापति मनोनीत भेलहुँ अछि तकरे उपलक्ष्यमे । आव ओ आशा करैत छलि जे 'बोटिंग' पर्याप्त मात्रामे भ सकत ।

एकटा स्वतंत्र 'बोट' ल 'क' 'ओ' आ 'हम' चल्ब काहि (रवि दिन) साँमू पहर एहने कार्य-क्रम हमरा लोकनिक बनल । तदुपरान्त एकर खुशनामामे हमरा ओकरा 'चाय' केर निमंत्रण देसय पड़ल । एवं हमरा लोकनि 'कैनटोन' दिश अमसर भेलहुँ ।

गंगाक निर्मल जलधारा । हम एक मांगीपर एवं दोसर मांगीपर बैसलि 'ओ' । —बोटल ग्रीन जार्जेट साड़ीमे आवेष्टित । हमरा हाथमे करुआरि—से शनैः शनैः चलिए रहल अछि । ओकर मुहँ आनन्द प्लवित बुझना जाइत अछि प्रायः ईहो बुझवामे सन्देह रहल जे 'ओ' कोनो गीतक अखड़ि गुनगुनाइत छलि । हमर कान साकांच भए उठल—

जखन आमि थाकबो ना, दिन हबे अवसान,
भुलाइया जइयो, मोरे राखो मम गान ।

आहा ! की करुण गीत छल । हमर हाथ सहजहिं शिथिल भय गेल एवं गति-हीन निस्पन्दित भय ओहिठाम आँघड़ाए गेलहुँ । नाव स्थिर रूपे बीच गंगामे एम्हर उम्हर बहकय लागल । सहसा सुनयमे आएल—डॉटि रहलि छलि जे हम नाव खेवनाइ कियैक छोड़ि देलियैक ।

हम 'कवि' क मूड बनोने बजलहुँ—की बढ़ियाँ होइत यदि हमरा लोकनि एहि बीच गंगा जल—समाधि ल लितहुँ ?

किछु काल धरि ओ गुम्मी लधने रहलि, पुनः बाजलि—त बेश, हम पानिमे कुदैत छी !!

हम चौकलहुँ—से किएक ?

नावमे डूबक अपेक्षा नदिएमे डूबब नीक—ई कहि ओ कुदऽक अभिनय करय चाहलक की नाव एकभंगू भय गेलैक एवं बहुत पानि नावमे भरि आयल छलैक ।

की प्रलय ? पानि केना उपछल जाएत ? सत्ते हमरा लोकनि डूबि रहल छी ? बीच गंगाक धार !! पानिसँ भरल नाव ऊब-डूब करैत । एतवेमे 'ओ' हड़-बड़ा क कूदक प्रयास करिते रहै कि नाव चट्ट दऽ उनटि गेलैक—हमर जी त सन्न द भगेल । चित्कार कय उठलहुँ—लीली !! लीली !! नाव बेने रहू । हम कोनहुना पार उतारिए देब ।

आँखि एतवेमे खुजि गेल, देखल नोरक टघार गाल पर द क बहि रहल अछि कंठ सुखायल एवं हमर हाथ दूनू गेड़आ के कसिआने दुरुखासँ लाल भौजी मुस्कुराइत डाँटि रहलि छलीह—“कहिया ज्ञान परान हैत अहाँ केँ ? कतेक बेरि कहलहुँ जे हाथ पएर धो क सूतू परन्तु के मानैयै हमर बात ।?

की बजितहुँ हम ? हड़बड़ा क उठलहुँ त देखैत छी 'फाइड' (Freud) क Interpretation of Dreams क किछु पन्ना उनटल एवं मोड़ाएल—जेना एकर अर्थ कहि रहल हो—ई स्वप्न, थोक अपूर्ति इच्छा ।

ब्रह्म ओ ब्रह्मा

श्रीगोविन्दभा

सिन्धुक तटपर ज्ञानक बटतर
तहिया कयने रही अहाँ उद्घोष
सोहमस्मि ! अर्थात्
ब्रह्म थिकहुँ हम, ब्रह्म—
निराकार, अविनाशी, अविचल
निर्विकार, निर्लिप्त
दूर कर्मसँ, दूर धर्मसँ
दूर रागसँ, दूर भोगसँ, दूर ज्ञानसँ
ब्रह्म थिकहुँ हम, ब्रह्म ।
जहिया कहने रही अहाँ से बात
बीतल तकरा आइ हजारो वर्ष
तइओ रहलहुँ अहाँ मुदा ओहनाके ओहने
आब चलत नहि काज
ब्रह्म बनने, अओ बाबू
रहए देत नहि आब लोक निर्लिप्त
लेपिए देत केओ बलजोरी
चानन नहि लिढ़ियाही पोखरिक थाल
आई कर्मसँ दूर रहब थिक,
सबसँ पैघ कुकर्म

निर्गुण बनल रहबसँ बाढ़ि
नहि दुर्गुण आन ।
आब बनू नहि ब्रह्म;
बनू ब्रह्मा, अओ बाबू
बनू विधाता, बनू सफल
स्रष्टा, अओ बाबू
भासि गेल संसार अहाँकेर काल स्रोतमे
करू फेर नव सृष्टि
दिअऽ पानिमे, दिअऽ माटिमे कर्षवीज
अपना लए अपनहि बनाउ संसार
बनू अहाँ कलजुगिया विश्वामित्र
करू फेर नव सृष्टि
ब्रह्मा बनिकेँ करू अपन सब सृष्टि
विष्णु रूप धए करू अपन प्रतिपाल
जँ राक्षस भए केओ करए उत्पात,
रुद्र रूप धए करू तकर संहार
बनल आब नहि रहू ब्रह्म
अगवे अओ बाबू !

जय महादेव

श्रीकाञ्चनाथभा 'किरण'

भूत-प्रेत, अर्द्धनग्न, भूखल, कंकाल सार
मानव केर दल, नरनारी, सभभावेँ संयुक्त एकाकार
कृषिकर्मक मौलिक प्रतीक बड़द पर भेल सवार
हे ईश ! अहाँ छी जन-एकता साकार ।
घर घर भीख माछि जीवैत छलहुँ पहिले,
होइतहि चेतनावन्त समर्थ,
पाबि गेलहुँ नगराज सुता सम सुदृढ़ शक्ति
जे, पशुवल प्रतीक मृगराज सदृश
पर शोणित पाविओ केँ कयलक वशीभूत,
तोड़ि देलक जन-शत्रु विषधरो केर दाँत,
तब भय गेल तनय अहाँकि सेनापति ओ गणनायक ।
छी अहाँ सदा शिव, विश्वम्भर,
भय कट्ट वनैछी प्रलयङ्कर
सुन्दर नव युगनिर्माण हेत करइत छी जग केँ चार-खार'
पीवि सुरा अप्सरा संग
नन्दन वन मे विहरथु महेन्द्र,
रमथु रमा सङ्ग मे उपेन्द्र,
धरा परक सर्वोच्च हिम-निर्मल
अवदात स्थान पर करइत पिनाक टंकार
अहीँ छी वास करैत !
कल्पनातीत अछि अहाँक सामर्थ्य ।
लक्ष्मी कान्तक विषप्रयोग भय गेलनि व्यर्थ ।
छी अहाँ निर्भीक ।
करै अछि सत्य सतत निवास
अहाँ केर कण्ठ मे ।
सत्यसँ भयभीत दुष्ट कहै अछि नीलकण्ठ ।
कहौ । ताहिसँ की ?
दैत छी जगकेँ अहीँ निज माथसँ,
शशिकला सम स्निग्ध रुचिर प्रकाश,
मन्दाकिनी केर विमल, शीतल
सलिल धारा सदृश जीवन दान ।
हे नकुल ! कुल मूलक अहंकार केँ तोड़निहार
छी अहाँ जन-एकता साकार ।

अभावक ज्वाला सँ....

नील अपूर्व नील आकाश । सायंकाल समीप प्रधान पथ पर
अजस्र मानव हल्ला-हसी नाना रङ्क वस्त्र पर रक्ताभ किरण । रस्ताक
कातमे एक मुरदा, जेकर ऊपरक चमड़ा मात्र अवशेष । नन्दीपति
तस्त । दुर्बलताक कारणें पएर डगमगाइत । माथ चकराइत ।
आँखि नस्तेज । सोचइत—हम भीख माडूँ ? सोचितहि जनता
दिस हाथ बड़ाओल मुदा मुँहसँ किछु बाहर नइ भ' सकल । अस्फुट
कंठसँ—दया करू । मुदा श्रोता निर्विकार । वस, नन्दीपति लाज
आ ग्लानिसँ स्तब्ध । अएँ, कुलान—संतान भ' क' भीख मडइत
छी ? गदनि नीचा कएने डेरादिस रूप धूर गेला ।

निशाभाग रातिमे ओइ दिन सुतबाकाल मुन्शी नन्दीपतिदास भुलले पेटेँ
रातुक अन्हार देवतासँ प्रार्थना कएल—'हे अन्धकार देव ! चिर-स्थायी रहू'
मुदा प्रात भइए गेल ।

रामूक एएस दस ओ शोनीक आठक करीब; दुनू कनइत खाइ लए । घरमे
एकटा दाना नइ जे एकरा सभकेँ देल जइतइक । सुखिया आ, विमला ओसारा
पर ठाढ़ि । अनाहारसँ दुनूक चेतना एखन धरि लुप्त नइ भेल अछि ।

माइकेँ भरि पाजेँ पकड़ि बाजल रामू—माँ ! भूख लागलए' आ भभकि-
भभकि कए कनइत कहैइत छलि शोनी—किछु देने खाइ लए ।

कोठलीसँ बहार भ' क' पुछल मुन्शीजी—ई सभ कनइत किएक अइछ ?
सुखिया अवाक् छलि मुदा विमला कनिबेँ जोरसँ—भूख लागलइए । जवाब
देलक ।

—किछु छइक नइ की ?

—नइ, घरमे कहाँ किछु छइक—विमला बाजलि । मुन्शीक आँखि डबडवा
गेलनि ।

—माँ गइ ! माँ ! सुनइ नइ छिहीं ? भूख लागलए ।

—किछु नइ छइक ! फेर पुछलथीन मुन्शीजी ।

—सत्ते कहइ छी बाबूजी ! नइँ किछु छइक ।

दुनू बच्चा कनइत—माँ ! माँ ! देने किछो खाइ लए...आब नइँ रहल जाइए ।

—विमला । हड्डी गनि सकइत छी एकरा सभक, एक...दू...ती...न भरिमास माँड़ खा' क' जीबइत पएँतीस रूपइआ पर मीलमे मुन्शीगिरीक काज करइत नन्दीपतिदासक माथ चकड़ा गेल । घर जा' क' पुरान, मइल फाटल कमीज पहिर लेल । बहरइँतहि सुखिआ पूछि बइसलि—'कतउ जाइ छिअइ कि ?

—हँ, देखइ छिअइ जँ कतउ किछो भेट जाए ।

एखन की केओ अहाँकेँ उधार देत ?

—तऽ फेर की करी ?

एक बेरि करुण कातर दृष्टिने ताकल सुखिया दिस । सुखिया सूखि काँट भ' गेलि छलि । विदा भऽ गेल । मुदा घूरिअएला सिरहीसँ नीचां धरि जा' कऽ

—सुखिया !

—अएँ ।

—किछो बन्हकी लगवइ लए अइछ ?

—कहाँ किछो छइक आब ।

दीदी गइ ! दीदी ! पएर पकड़इत छिअउक; किछो दे ने खाइ लए रामू ओ शोनी विमलाकेँ तड करइ छलइक । नन्दीपति खिन्न होइत बजला—आब की करइत छी ?

—पितरिया एगो थारी छइक, सहए नेने जाउ... ।

—फेर खएब कथीमे ?

—पहिने खाइ लए हएत तखन ने कथीमे खाएब ?

—बेस त' दऽ दिअ ।

सुखिआ घरसँ थारी आनि देलक आ मुन्शीजी विदा भेला कि भूखल बाघ

जकाँ मकान मालिक आगाँ आबि ठाढ़ । देखतहि मुन्शीजी थम्हि गेला ।

कृतिम हँसीसँ—अरे विश्वनाथजी । कहू कुशल ?

—कुशल की कप्पार । एखन धरि अहाँ तँ मकान-भाड़ा नहिबेँ देल...तीन मास भ' गेल—आइ काल्हि करइत छी... ?

हैं हैं की कहइत छी बुड़िबक जकाँ हैंहिंआर लगता मुन्शीजी आ धमकी दइत बाजलमकान-मालिकहैं हैं-नहि, कहू जे मकान-भाड़ाकखन दइत छी ? देव, देव, विश्वनाथजी ! आर दू चारि दिन सबूर करू। सब चुका देव ! नन्दी-पति थारी नुकेबाक चेष्टा कएल मुदा विश्वनाथक तीव्र नजरि देखिए लेलक । —बेस, हम काल्ह भिनसरे आएब, जँ भाड़ा देल तँ बड़ बढ़ियाँ नइँ तँ हमरा मकानमे ताता लगबऽ पड़त...। बड़बड़ाइत चल गेल मकान-मालिक विश्वनाथ प्रसाद ।

एम्हर मुन्शीजी थारी ल क पहुँचि गेला बड़ीबजार चउधरीक दोकानपर आ किछु काल कातमे ठाढ़ रहलाक बाद संशयपूर्वक पुछथीन—एकरा लेव अउ ?

—ऊँ हूँ, बड़ पुरान अइछ ।

—‘ऐंह से की कहइत छिअइक ?’

—तऽ दोसर दोकान देखूगऽ...अढ़ाइ रुपयआ मे दी तऽ राखि दिअउक ।

—किच्छु आर द दिअइक, बड़ कम कहइत छिअइक, अउ !

—बेस त आठ आना आर देव, राखि दिअउक ।

किछु काल गुम्म रहलाक बाद थारी राखि देल आ रुपइआ ल क पहुँचि गेला चाँदरक दोकानपर । दोकानदार देखितहि पुछलक—की हाल नन्दीपतिजी ।

कहुना कटल जाइत छइक—वेअपर बइसइत कहल मुन्शीजी ।

—की चाही ? दोकानदार पुछलक ।

—चाउर लेवाक अइछ । मुन्शीजी कहल ।

—रुपइआ ? कपार कड़ा केलक बनिवाँ । रुपइआ बड़ा देल मुन्शीजी । गल्लामे रखइत दोसर दिश तकइत बनिवा—अरे तीन रुपइआ आर द दिअ तखन ने आगू; पहिने पछिला साफ कऽ लिअ आ गल्लापर कहुनी द क अङ्गुरी फोरइत बाजल ।

अएँ की ? मुन्शीजीकेँ भेलनि जे माटि डोलएत छइक । बनिवाँ फेर बाजल —पछिला रुपइआ चुका दिअ तखन आगाँभेटत । ओ समय चुकनिहार बनिवाँ नइँ छल ।

भाइ ! दया करह हमर हाथमे आव किच्छु नइँ अइछ । व्याकुलपूर्वक नन्दीपति कहल मुदा धोधि हसोतथि बनिवा बाजल—सरकार ! माफ करब, व्यवसाय मे दया कतऽ ?

—हमर नेना आइ को खाएत ?

—कोन उपाय ? हमहूँ ते आखिर एक गरीब बनिचौं छी ।

हाथ पकड़इत छिअह, दया करह ।

बनिचौं किच्छु नईं बाजल । नन्दीपतिक नजरि पड़ल अपन अंजलिबद्ध हाथपर । सोचल —कुलीन संतान भ' एकर पएर पर खसो ? डगमगाइत आगू बढ़ला । हुनक मस्तिष्कमे बुद्धि नइ...शरीरमे शक्ति नइ...आँखिमे ज्योति नइ...पेटमे अन्न नइ...। संतान'क कानव एखनहुँ कानमे अबइत छल । बजारसँ डेरा घुरला । उदास देखि सुखिआ पुछलक—बाजारसँ किछु आनल नइ ? की भेल ?

—नइ, रुपइआ ल' लेलक बनिचौं पछलिा तरें । बइस रहला असोरापर माथा हाथ द' क' । किछु काल चुप रहलाक बाद सुखिआ बाजलि—आ मील नईं जेबइक ।

—हँ, जेबइक त' अवस्से ने ।

—तखन नहाउने आव, बेर त भ' गेल ।

—नईं, नहाएव नईं, नहा लेव त भूख लागि जएत । सुस्ता' क' उठला मुन्शीजी आ विदा भ' गेला मील कए । किशोनी माइक आँचर धिचइत—गइ माँ । गइ ! किच्छो खाइ लए देने; आव नईं सहल जाइए । कानए लागलि ।

नन्दीपति सीढ़ीपर धरि गेल छला—गरदनि टेढ़ क केँ देखल—कंकाल मात्र बचल .. हड्डी नौक जकाँ गनल जा सकइत छइक...

मीलक दछिनवरिआ कोनटा पर एक तख्तपोस राखल । तइपर नन्दीपति अपन वस्ता पसारल । करीब बीस मिनट बितल हेतइक की एक गोटे आबि एकटा पुरजी देलकनि । पुरजी छल मनेजरक बुलाहटि । भट वस्ता सरिआ क विदा भ' गेला मनेजरक आफोस कए । कनिचैँ कालक बाद मनेजर—अउ नन्दीपतिजी ! हमरा दुखऽछि जे थोड़ेक नोकर के हमरा छोटए पड़त जइते अहूँ छी... ।

—अएँ ई की कहइत छी मनेजर साहेब ? मुन्शीजी विहल होइत पूछल आ मनेजर पुनः कार्यगत होएबाक मुद्रामे—ठीक कहइत छी, जाउ काज करू गऽ; काल्हसँ जनु आबो ।

अकस्मात् नन्दीपतिक प्राण-स्पन्दन रुकि शरदक उज्ज्वल आकाशमे फतिङ्गी
फुदकइत देखलक ।

—दया करू ।

—हम की करब, दया करवाक शक्ति हमरा कतऽ ?

नील, अपूर्व नील आकाश । सायंकाल समीप । प्रधान पथ पर अजस्र मानव ।
हल्ला-हँसी । नाना रङ्क बस्त्रपर रक्ताभ किरण । रस्ताक कातमे एक मुरदा,
जेकर ऊपरक चमड़ा मात्र अवशेष । नन्दीपति त्रस्त । दुर्बलताक कारणे
पएर डगमगाइत । माथ चकराइत । आँखि निस्तेज । सोचइत—हम भीख
माझू ? सोचितहि जनता दिस हाथ बढ़ाओल मुदा मूँहसँ किछु बाहर नइ
भ' सकल । अस्फुट कंठसँ—दया करू । मुदा श्रोता निर्विकार । वस, नन्दीपति
लाज आ ग्लानिसँ स्तब्ध । अएँ, हम कुलीन—संतान भ' क' भीख मङ्गइत
छी ? गरदनि नीचा कएने डेरादिस कए घूरि गेला ।

एमहर सांभक धुआएल वातावरणमे एक युवक सुखिआकेँ हाथमे किछु दिअ
लागलकि—सुखिआऽऽऽ नन्दीपतिक गर्जन सूनि हाथ सम्हारि कए गली द'
पड़ाएत । सुखिआ पाथर भ' गेलि ।

—के छल ओ छँओरा ?

—ओइ डेराक काशीनाथ... ।

—की दइत... ?

—कइआ ।

—किएक ?

—खाइ लए, आव भूखेँ नइ रहल जाइए... ।

—चुप्प, खबरदार, फेर हम देखल तऽ गरदनि हम मोकि देब । भूखबरदास्त
नइ कएल जाइत छउक तँ जो—मरि जो; भूखल कुरुर नहि भूकि-भूकिके
...नन्दीपति गरजला कि विमला आवि पूछि वइसलि—अएँ की भेलइक ?
मुदा ककरोसँ जबाब नइ पा' कोठलीसँ बहार भ' गेलि । मुन्शीजी घर जा
एक कोनमे बइस रहला । ओ जनइत छला जे विमला कनवा लए, किछु
सोचवा लए कतउ एकान्तमे गेलऽछि ।

कनिबेँ नइ कि केओ बहारसँ सोर कएलक—नन्दीपतिजी! अउ नन्दी-
पतिजी !!

—के थिकउँ, पूछइत मुन्शी जी वहीलातँ देलख—नगेन्द्रबाबू राम आ' शोनीक कान पकड़ने ठाढ़ आ महल्लाक हेगामा लोक थहा-थहि करइत । नगेन्द्र बाबू कोधेँ थर-थर कँपइत—अउ ! अहाँक बच्चा सभ चोर अइछ, चोर । एकर शरीरक रोइजाँ-रोइजाँमे बदमाशी छइक ।

—की कहइत छी हमर बच्चा चोर ?

—हं अउ, फूसि थोड़वे कहइत छी ? एखनई ई दुनू हमर मनसा घर जा' क' चोर जकाँ खा लेलक अछि । कहू त नीक लोक ई आचरण ! हमतँ लाजेँ गलल जाइत छी, छिआ...छिआ...। बजइत दुनू नेना केँ मुन्शीजीक आगू कए धकेल देल ।

—माफ करू नगेन्द्र बाबू ! एकरा दिससँ हम क्षमाप्रार्थी छी । कल जोड़ि कहल । दुनू नेना कनइत । नगेन्द्रबाबू बड़ मारने रहथीन । सभकेँ चल गेलाक बाद मुन्शीजी रामू कएँ एक चाट मारलथीन कि—छोड़ि दिअउक बाबूजी ! नगेन्द्र बाबू बड़ मारलथिन्है कहइत मुन्शीजीकेँ सम्हारि लेलक विमला ।

—नई विमला ! नई, ई चोर भ' गेल ।

—मुइलउँ, माए ! कहइत शोनी दउड़ि माइकेँ भरि पाँजकेँ धेलक । रामूक आँखिमे नोर मुदा मुँहमे बकार नई ।

—आइ तऽ मारिए देबउक, आबिर चोरि करव सीखि लइत गेलें तों सभ मुदा हठात् हाथ रुकल । बच्चाक पसली पर नजरि गेल । गनल जा सकइत छइक ई हड्डी । रस्ता कातऽक दृश्य आँखिक आगाँ नाचि उठल । क्षणभरिक टाढ़ किछु गरम कंठसँ बजला—तों सभ नाक कएलें...हम जखन बाप भ' अन्न नई द' सकइत...। बजइत-बजइत ठोंठ बाझि गेलनि आ' ऊठि क' विदा भ' गेला । उद्देश्यहीन, नितान्त उद्देश्यहीन नन्दीपति गली सभमे बउआइत । अर्ध प्रकाशमे ओ अपन डेरादिस कएँ विदा भऽ गेला । रातुक एगारहसँ किछु बेसिए भ' गेल छलइक तखन । डेराक आगाँ ठाढ़ भ' क' सोर कएल—विमला...!

—केबाड़ खुजले अइछ, चल आउ । ओरिआक अएबइक घर अनहार अइछ । त (किरासन लए कइआ कहाँसँ अउतइक ।) टप्पा—टोइआ दइत गर गेला तँ नहुँएस पुछलथीन—एखन धरि सुतइत नइ गेलेहैं तों सभ ?

—.....!

—विमला !

—की ?

—रामू आ' शोनी कतऽ अइछ ?

—घरमे सूतल ।

—तां सभ किच्छु खाइत नइ गेल हएवं ?

—.....।

— कतऽ सँ खएत जखन हम नइ किछु आनि देलिअइक) सुखिआ !

—को ?

—बड़ कष्टमे छी अहाँ सभ । ई सभटा दोष हमर....।

—मरा सभलए नइ कोनो जे ई दुनू नेना....।

—हे भगवान् ! सूति रह विमला ।

माटिपर सूति रहलि विमला ।

—भगवान् ! मुन्शीजी आकाश दिस देखल । एक शीर्षाचन्द्रिका कें आलोक मे आकाश किछु अस्पष्ट प्रतीत भ' रहल छल । किछुए कालमे सभ सूति रहल ।

नन्दीपति विचारइत—बचवाक आव कोनो उपाय ? कोनो उपाय ? कोनो उपाय नइ । हँ, एक उपाय—सुखिआ अन्हारमे नवयुवकसँ कइआ लेत, रामू आ शोनी लोकक घरसँ चोरी करत, विमला सरकक कात बइस अपन सूखल हाथ देखा भीख माइत, आ अपने ? अर्थात् मुन्शीनन्दीपतिदास ? नइ ओ ई उज्ज्वल भविष्य देखबा लए तइआर नइ तखन ? भिनसरे मकान-भाड़ा वाला आओत । नइ, नन्दीपति भाख नइ भाडि सकइत छइथ । स्त्री, पुत्र आ पुत्रीक सङ पतित नइ भ' सकइत छइथ । कुलीन.....मुदा फेर उपाय ?

अपन धोती खोलि रस्सा जकाँ लगला वाँटऽ । छतक जंजीरमे बान्हि देल, एतवाधरि शांति छल । दुवल शरीर थर-थर कँपइत । तखन, फेर कनहुँना रस्साक फानीमे ओरिआक' अपन गरदनि फँसाओल आ खिड़की छोड़ि लटकि गेला ।

जँ जँ फाँस गरदनिकेँ दबने जाए, हुनक विस्फाटित युग्म-नेत्रक आगाँ क्रमशः सुखिआ, विमला, रामू आ शोनीक छबि नाचयऽ लागल मुदा तकरा बादे ओ लटकले छता जेना अपनकेँ युक्त करवा लए छटपटाति, मृत्युक चह एवं अभावक ज्वालासँ.....।

विद्यापतिक एकटा दृष्टिकूट

श्रीमञ्जुलजी हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठित विद्वान् रहितहुँ मैथिलीक बड़ प्रेमी छथि । हिनक ई लेख बड़ आदरसँ पाठक द्वारा स्वागत हैत से आशा अछि ।

मैथिल-कोकिल कवि विद्यापतिक कल-काव्य-गान जत अपन सहज अनुपम भाव-सौन्दर्य एवं मोहक-माधुर्यसँ काव्य-जगत् मध्य सहृदय लोकनिक श्रुतिमे अद्यावधि लोकोत्तर आनन्द धारा ढारि रहल अछि तथा पदे-पदे हिनक शब्द सारल्य और अर्थ-बाहुल्यकेँ अवलोकन कय संसार भरिक काव्य-मर्मज्ञ विद्वज्जन मुग्ध भै रहल छथि । ओत हुनक काव्यमे यत्र-तत्र प्राचीन मंस्कृत कवि गतानुगतिक काव्य रूपेँ गुण-पूर्ण दृष्टिकूटो, जकरा क्लिष्ट काव्यक संज्ञा देल जाइछ, पाओल जाइछ । एकटा सरस दृष्टिकूट कविताकेँ रसास्वादन करू आर देखू बुझौल व्याजे कविक विलक्षण काव्य वैदग्ध्य । उद्गीत दृष्टिकूट कविक अछि :

कुसमित कानन कुञ्जे वसि ।
नयनक काजर घोरि मसि ॥
नखसँ लिखलि ननिनि दलपात ।
लिखि पठावल आखर सात ।
पहिलहिँ लिखलन्हि पहिल वसंत ।
दोसरे लिखलन्हि तेसरक अन्त ।
लिखनहि सकलि अनुज वसन्त ।
पहिलहिँ पद अछि जीवनक अन्त ।
भनहिँ विद्यापनि आखर लेख ।
बुध जन हो से कहथि विशेष ॥

कहबाक अभिप्राय जे कोनो (कवि काव्यक नायिका) प्रोषित पतिक (जकर) ति परदेश वासी छैक) विरहान्तसँ परितप्त भै पुष्पित वन निकुंज

(उद्यान) मे बैसि आंखिक काजरक मसी घोलि कमलक पातपर नँखसँ सात अक्षरक लेख लिखि पतिक पास पठौलन्हि, जाहिमे पहिले वसन्तक पहिल, दोसरे तेसरक अन्त लिखलैन्हि । वसन्तक अनुजकेँ उल्लेख नहि कै सकली किएक कि पहिले पदमे नायिकाक जीवनक अन्त भावी अछि । कविक प्रश्न जे नायिकाक अक्षरलेख की छल सैह विद्वान लोकनि बूझि कै विशेष रूपेँ कहथि । कविक उक्त पद अन्तर्लापिका दृष्टिकृटक सुन्दर उदाहरण अछि ।

वर्षा जीवक अन्त वैह नायिका कै सात अक्षरक लेख (प्रेक्ष्य वाक्य) कतवा पाण्डित्यसँ प्रदर्शित कैल गेल अछि ?

वसन्तक पहिल अक्षर व आर वसन्तक तेसर ऋतु वर्षाक अन्तिम अक्षर 'षा' मिलि कय वर्षा भेल तकरा बाद कवि रचित पद्यकेँ आठम पंक्तिक जीवनक अन्त पाँच अक्षरक पद जोड़ि देने 'वर्षा जीवक अन्त' कै जाइत अछि । वर्षा विरही लोकनिक हेतु कतवा भयावह आर घातक अहि सैह केओ

घन घमंड नभ गर्जत घोरा,

प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥

सीता वियोगी भगवान रामचन्द्रसँ तथा 'आषाढस्य प्रथम दिवसे' कालिदासक विरही यत्नसँ पूछि देखथु ।

विद्यापतिक विरह विदग्धा नायिकाक अवस्थाक एतवहिसँ अन्दाज कै लिअ कि ओ वसन्तक अनुज (आगाँक) ऋतु शब्दहु नहि लिख सकैत छल कारण जे पहिलहि पद (एकटा वर्षा मात्र शब्दहि) सँ जीवन संशयापन्न भय रहल अछि । तात्पर्य जे वर्षा (वर्षा-ऋतु) मे अहाँ यदि नहि आयव त हमर अन्त जानबि ।

प्रस्तुत पद्यमे कविक प्रयुक्त प्रत्येक शब्द ध्वनियुक्त एवं अतिशय भावपूर्ण अछि । 'कुसमित कानन'सँ नायिकाक प्रकुल्ल यौवन एवं उद्दीपन विभाव, नयनक काजरसँ सौभाग्य, नखसँ शृंगार-प्रसाधन साहित्य तथा नलिनी-दल पातसँ विरह-ताप-शमनत्वादि सुतरां ध्वनित भै रहल अछि ।

कुसमित पद कविकुलगुरु कालिदासक :

आशाबन्धः कुसुम सदृशं प्रायशोह यङ्गनानां

सद्यः पति प्रवयि हृदयं विप्रयोगे रूणद्धि ॥

(वियोगीनी-रमणीक हृदय कुसुम (पुष्प) जहाँ होइत छैक, जकरा आशा रूपी वृन्त पकरते रहैत अछि शीघ्र खसै नहि दैत छैक) स्मरण करा रहल विरहिणी नायिकाक विरह-ज्वाला एतेक धरि बढ़ल रहैक कि ओकर तापसँ आन कोनो (कृत्रिम) मसी शुष्क भै जाइत किन्तु वियोग-तापसँ परिस्रुत नेत्र-नीरधरसँ प्रवाहित अश्रु-वारिसँ घुलल काजर-रूप मसी कै सहसा शुष्क होइत असंभव । यदि नखक अपेक्षो कोनो आन काष्ठ अथवा तृणक लेखिनीसँ लिखतोह त तनिक असह्य तापसँ सैह अवश्यहि जरि जाइत । निजाङ्गभूत नखक ज्वलन कथमपि संभव नहि, तँ नखक लेखिनी कै परमावश्यक । अपिच विरहक तीव्र दाह रहला सन्ता रात्रिनिद्व, निसर्ग-शीतल सलिल-जन्मा जलजक पात पर लिखब सर्वथा उचिते छैक अन्यथा दोसर जातिक दलकै प्रचंड वियोगानलक समक्ष क्षण भरि रहबाक कल्पने नहि ।

एहि प्रकारे काव्यालोचक मते निम्न श्रेणीक दृष्टिकूट काव्यहुमे अरमणीयता न्नाएव विद्यापति जहाँ विलक्षण प्रतिभावान कविकहि कार्य थिक । विद्यापतिक परवर्ती महाकवि सूरहुक सूरसागरमे विद्यापतिक उक्ति कहैत छथि :

कोई परदेशो की बात,

मन्दिर अरध अवधि हरि वदिगे हरि अहार चल जात ।

अजया भख अनुसारत , नहिँ कैसे दिवस सिरात ।

आदि अनेकों दृष्टिकूट देखना जाइछ । परन्तु विद्यापतिक काव्य कल्पनाक आनन्द अन्यत्र कतहु प्राप्त भै सकैत अछि ?

धन्य कवि विद्यापति आर धन्य हुनक अद्वितीय काव्य-प्रतिभा ।

स्मृति

आइ प्रतः काल्हिसँ शंकरक मानस-पटन पर अतीतक स्वप्निम आर श्यामल रेखा चित्रित भऽ रहल छलनि । हुनक वर्तमान अतीतक कल्पना केन्द्र छल । किन्तु मानवीय भाग्यक गतिविधिकेँ जानि के सकेछ । ककरामे ई सामर्थ्य छै विधाताक विधान जानबामे स्वयं विधाता बनक तपस्या चाही । ओ सोचैत छथि ओह ! ई सीमाहीन अन्धकार अपरिहार्य अछि । एवरा केओ राखि नहि सकैछ । भगवान भास्करमे रोकबाक शक्ति अवश्य, किन्तु ओहो अपन नियमक शृंखलासँ जकड़ल, अपनेकेँ विश पावि समुद्रक अकशायी बनल छथि । तँ, की, दूर नहि भऽ सकैछ ?! भला जे आवि गेल ओ दूर कियेक हो ? प्रकाश मिभा सकैछ परन्तु अन्धकार नहि । चिरस्थायी अन्धकार कतेक भयानक ? मृत्युक उपरान्त जेवन सम्बन्धी समस्त रेखा प्रच्छन्न भऽ जाइछ पुनः एहिकेँ आधार शिला मानि जीवनक मधुर कल्पना, असाध्य रोग पर विजय पावक हेतु—बान्धवक साहसपूर्ण वचन थिक । ओह । अभागल क्षणास्थयी जीवन.....’

शीतक समय । संध्या भऽ चलल छल । हवाक स्पर्शमे तीव्रता रहैक । शङ्कर अपन नौकरीक कार्य सम्पन्न कय, आवैक समय किछु तरकारी बाजारमे कीनै लगला, अतः विलम्ब भऽ गेलनि । मार्गमे अनुभव होमऽ लगलनि—आइ ठंढा अधिक छै ।

तरकारी पत्नी ताराक सामने राखि, हाथ पैर धोय, चौकी पर बैस गेलाह । विनोद-प्रिय शंकर चुपचाप चौकी पर बैसल छथि, ई नूतनता थिक । तारा भानस घरमे प्रबन्धमे छथि ।

किछु खाइक वास्ते नेने आउ ? तारा घाहिसँ पूछलखिन ।

अखन नहि, भानस तैयार भेलाक उपरान्ते भोजन करब, जलपान करक इच्छा नहि अछि ।

भानसमे एखन देरी छैक । ततेक सबेर भोजनकऽ के जैत छी जे भूख अवश्य लागल हैत, तारा आग्रह केलखिन ।

कहि तऽ देलौ ! एके बेर भोजन करब—शंकरक छोट उत्तर छलैन । ताराक मनमे एक स्वल्प धक्का जकाँ लगलनि । ओ सोचऽ लगलीह—एहन उत्तर पहिले पहिल सुननामे ऐल । स्वास्थ्य ठीक छैन कि नहि । आइ उत्तरमे उदासी प्रतीत होइछ । आइ कतहू कोनो विषय तँ नहि उपस्थित भऽ गेलैक । हमरा अपन त्रुटि तँ नहि बुझाइत अछि । हँऽ ! स्मरण भेल, धोतीमे खोंच लागि गेल रहै, हमरा कहल गेल छल सी दैक वास्ते किन्तु हम बिसरि गेलियै । किन्तु एहि अन्धकारमे धोतीपर दृष्टि जेबाक तँ सम्भावनो नहि । आर एहिसँ की—ई तँ बहुत छोट विषय थिक । तावत् चूल्हिमे थोड़ेक जारनि देब लगलीह ।

भोजनोपरान्त दुआरिमे चौकी पर बैसल शंकर कहलखिन—तारा ! शीघ्रतासँ भोजन करू आर कम्बल दै जाउ । एहिठाम बहुत अनहार छैक लालटेन सेहो नेने ऐब ।

तारा कोनो प्रकारक उत्तर नहि दै—शीघ्रतामे रहथि । भोजन सम्पन्न कयलनि । मनसा घरमे जंजीर दऽ, एक हाथमे कम्बल आर दोसरमे लालटेन लऽ कऽ चलली कि लालटेन मिझा गेल । पुनः लेसबाक उपक्रम करै लगलीह । आइ प्रातः कालहिसँ शंकरक मानस-पटल पर अतीतक स्वप्न आर श्यामल रेखा चित्रित भऽ रहल छलनि । हुनक वर्तमान अतीतक कल्पना केन्द्र छल । किन्तु मानवीय भाग्यक गतिविधिकेँ जानि के सकैछ । ककरामे ई सामर्थ्य छै विधाताक विधान जानबामे स्वयं विधाता बनक तपस्या चाही । ओ सोचैत छथि ओह ! ई सीमाहीन अन्धकार अपरिहार्य अछि । एकरा केओ रोकि नहि सकैछ । भगवान भास्करमे रोकबाक शक्ति अवश्य, किन्तु ओहो अपन नियमक शृंखलासँ जकड़ल, अपनेकेँ विवश पाबि समुद्रक अंकशायी बनल छथि । तँ, की, दूर नहि भऽ सकैछ ? भला ! जे आबि गेल ओ दूर कियेक हो ? प्रकाश मिझा सकैछ परन्तु अन्धकार नहि । ई चिरस्थायी अन्धकार कतेक भयानक ? मृत्युक उपरान्त जीवन सम्बन्धी समस्त रेखा प्रच्छन्न भऽ जाइछ पुनः एहिकेँ आधार शिला मानि जीवनक मधुर कल्पना, असाध्य रोग पर विजय पाबक हेतु—बान्धवक साहसपूर्ण वचन थिक । ओह ! अभागल क्षणस्थायी जीवन.....” तावत एहि बीच तारा लालटेन सामने कै हिनक चिन्तायुक्त आननकेँ निहारल ।

प्रसन्नता कियेक नहि भलि । भोजनो बहुत कमे कयलहुँ । केहन चिन्ता थिक ? कहै कियैक नहि छी ? एहन कोन बात जे हमरोसँ सुन रहे ? —तारा चितित होइत पुछलखिन ।

शङ्कर ताराक दिशि देखि, अपना निकट बैसबैत पूछलखिन—पहिने ई कहू, कि, एहि घनघोर अन्धकारमे अहाँ बिलीन तँ नहि भऽ जैव ।

ई एक प्रकारक पहेली थिक । हमरा बुझनामे किछु नहि अबैत अछि किछु बुझु और उत्तर दिअ ।

अन्धकार आर हमरा दिश देखू, फेर कहू दुनूमे केहन समानता छै ।

अहाँक उत्तर नितान्त सत्य अछि । ई ज्योत्सना चाँद छोड़ि तमिस्राकेँ सहचरि नहि बना सकैछ । एहिपर तारा स्नेह मिश्रित हठ करैत बजलीह—अहाँ हमरा एक दोसर रास्तापर घसीट लयलहुँ । हमर शपथ, सत्य कहू बात की थिक । बिलम्ब नहि करू । ई केहन प्रकृति, जखन पूछू तेँ सत्य—सत्य नहि कहब । यदि आइ नहि कहब तँ एहिना पूछल करब आर राति भरि सूतऽ नहि देब !

वस्तुतः मानवक ई दुर्बलता थिकै, जे जाहि विषयकेँ ओ विस्मृतिक अतल गर्भमे फेदबाक चेष्टा करै अछि, ओ विषय ओकरा द्वारा एकदम त्याज्य नहि होइत छै । प्रत्युत पूर्वापेक्षा आर बृहत्काय बनि, समस्त आवि अपन परिचयक पाठ खुलिके पढ़ावऽ लगैत छै । शङ्करो एहि प्रकार यत्न कयलनि तथापि किछु सम्बन्धमय बात कहले गेलनि । चितित स्वरमे बजलाह—दू मास बीत गेल, घरसँ कोनो पत्र नहि ऐल । जी लागल रहै अछि । अखबारमे देखलिपे बहुतो गाम जलमग्न छै । प्राणीक स्थिति चिन्ताजनक छै । डाक सम्बन्ध टूटक सेहो सम्भावना । प्रायः एहि द्वारे कोनो समाचार नहि ऐल । तारा सत्य कहैत छी, कोशी नदी एक संहारिका शक्ति थिक । जानि नहि कहाँ ई विश्राम लेत ।

एक तार दऽ कऽ देखबाक चाही । सेहो जबाबी तार, किछु समाचार आवि जाय । केवल सोचने कोन लाभ ? तारा समाधान करैत बजली ।

हँऽ एवं प्रकारे हमहूँ सोचैत छी । राति बहुत बीत गेल, सूतबाक चाही शङ्कर सूतैक उपक्रम करै लगलाह । किन्तु एतबा उत्तर मात्रसँ ताराक मनमे

जिज्ञासा यथावत बगले रहलनि । ओ ई कहि कि सूतव तँ अछिये भिन्तु कहलहुँ नहि' उडे लगलीह, तावत बाहि पकड़ि, शंकर विषादमय मुस्मान संग कहलखिन—'अच्छा सूनु' आर दीर्घ निस्वास लय कह लगलखिन—

पहिले पहिल हमरा गाममे कोशी नदीक पानि ऐल । पानि नहि कृषक लोकनिक भाग्य ! फसत बढ़ियाँ होमऽ लगलै । धरती सोना उपजौलनि । ओहि समय कृषक लोकनि मे उत्सास, स्फूर्ति आर प्रकाश छलै । लोक सब मनौलक 'हे माता कौशिकी ! अहाँक प्रति वर्ष शुभागमन हो । आवने पूर्व जाइक आवश्यकता रहै ने पश्चिम । किन्तु के जानैत छल कि, एक व्याधक जकाँ जे अपना जालक चारू कात दाना दैत छै से निरीह पक्षीक फांसक हेतु, कोशीक एहि सद्व्यवहारमे प्रचण्डता नुकायल अछि । किछु वर्षक उपरान्त बाढ़ि अवैत रहलै । गामक आस—पास पानि जमै लगलै । अटकल पानिक संग सब प्रकारक बीमारो अरन आवास बनौलक । एक समय, अन्त मे ध्वंस—लीला प्रारम्भ भेल । कौशिकी अपन वेश रचनाक वास्ते कोनो सौभाग्यवतीक तिन्दूर लेलनि तँ कोनो अनाथ बच्चाक मातृ-अक; कतहुँ पिताक स्नेह तँ कतहुँ भ्रातृ प्रेम, आर कतहुँ युवकक उच्छ्रित मधुर उमंग ।

एक-एक गामारीक प्रकोप चरम सीमापर छल । तारा ! गाम भरि मे रुदन, हाहाकार, भय आर निराशाक साम्राज्य रहै । ओहि समय हम नौकरी नाह करैत रही । कार्तिक मास, दू बजे दिन रहै, हम घर रहलहुँ कि देखैत छी—हमर प्रथम स्त्रा पटियापर सिकुरल पड़ल आर थरथरात । एक ठउर कपड़ासँ ओकर देह आवृत । हम निकट जा माथ पर हाथ राख पूड़लियै—उर भ गेल—ओ अपन गाम...गरम शंकरक गला भार गेलान । लालटेनक प्रकाश मे शंकरक आँखमे मोती देखि, तारा चुप भए गेलीह ? ओह ! ई चुप भ गइत । ...गरम हाथस हमरा बाहिके पकड़ि बाजनि—उरक लक्षण नीक नहि अछि । हम धैर्य दोलयक, बहुत आदमी दुखित पड़ैत छै, सब ठाक भऽ जाइत छै । एखनहि स्वस्थ भऽ जैव । तारा ! हमर शुभ कामना आर घरक लोकनिक प्रयत्न ओहि देवाकेँ एक माससँ अधिक राकबाम असफल सिद्ध भेल । क्षीण दशामे बहुत स्नेहस हमरा अपना निकट सोरपारि कहलन्हि—आहाँ सावधान भऽ जाऊ । हमरा जेना बुझाई कि—कोनो घातक चिन्तासँ आहत भऽ रहत अछि । यह अगहनक मास, दिन भरि कुद्देश के द्वारे सूर्यदेवक दर्शन दुर्लभ । एहि त्रयोदशक शिवाचिनी तमिस्रामे ओकरा सिरमामे हम बैसल रहो । आँख खोलि अन्त मन्द स्वरमे बाजलि—केवल एक अहाँक चिन्ता हमरा संग..... कहैत शंकरक गाल पर अविरल अश्रुक रेखा बनैत रहै आर तारा अपना आँचलसँ मेटवैत रहथि ।

त्याग

श्रीभाग्यनारायणभा

एक गरीब ब्राह्मणके दूइ टा बालक रहैन्ह । ब्राह्मण महादरिद्र छलाह । कोनो प्रकारे ब्राह्मण अपन जीवन-यापन व्यतीत कय रहल छलाह । जखन बालक लोकनि छेटगर भेलखिन्ह, तखन ब्राह्मण पढ़ेवाक लेल जिज्ञासु भेलाह । परंच कैचाक परम अभाव रहैन्ह । कैचा उपार्जनक उपाय ताकय लगलाह । संसार बगोरि आवधि परंच कोनो उपाय नहि भेटलन्हि ।

एक दिन ब्राह्मण एक डिप्टी साहेबक ओतय गेलाह एवं बिनयपूर्वक कहलथिन्ह जे—डिप्टी साहेब । हमरा दूइ टा बालक छथि । ओ लोकनि छेटगर भय गेलाह अछि । पढ़ेनाई आवश्यक । तँ अपने ओतय अएलउँ जे कोनो उपाय देखायवाक कृपा कैत जाय । डिप्टी साहेब कहलथिन्ह जे हमरा ओतय कोनो नौकरी-चाकरी नहि अछि । जौ मनसियाक कार्य करवाक हो तऽ हम धरा सकै छी । ब्राह्मण बजलन्हि जे—एहि समय हम कोनो प्रकारक कार्य करय लेल प्रस्तुत छी । ब्राह्मण मनसियाक कार्य दस टाका मासिक वेतन पर करय लगलाह । ब्राह्मणक अथक परिश्रम देखि डिप्टी साहेब हुनक बालककेँ अनाथालयमे भर्ती कराय देलथिन्ह । दूनु बालक जखन मिडल परीक्षोत्तीर्ण भेलखिन्ह ता धरि ब्राह्मण किछु टाका जमा केने छलाह । ब्राह्मणक हाई स्कूलमे दूनु बालककेँ नाम लिखाय (Admission) देलथिन्ह । जगदम्बाक असीम कृपासँ हुनको ओही स्कूलमे घंटी बजेवाक कार्य भय गेलन्हि । निःशुल्क शिक्षा दूनु बालक पवैत छलथिन्ह । नीक छात्र रहबाक कारणेँ छात्रावासमे भोजनक सुविधा सेहो भेट गेलन्हि । दूनु बालक जखन मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण भेलथिन्ह तखन रेलवे नौकरीक लेल आर्देन पत्र (Application) देलन्हि । भगवतीक असीम कृपासँ जेठ बालककेँ रेलवे गार्डक स्थान प्राप्त भेल । एवं कनिष्ठ पुत्रकेँ टिकट कलेक्टरक स्थान प्राप्त भेलन्हि । आव ब्राह्मण स्कूलक चाकरी छोड़ि गामहिपर निश्चिन्त जीवन विताबय लगलाह ।

नवीन लेखनीसँ :

भाग्य

श्रीचन्द्रावतोदेवो

लत्ती - फत्ती सँ घेरल घर,
केहन सुन्दर लगइत अछि ।
एहि मे ईश्वर विराजमान छथि,
देखवाक मन होइत अछि ।
एहि कुटिया मे दीन - हीन,
बालक एक पढ़ैत अछि ।
ओकर चारु भाग बिरा मे,
फूल अनेक खिलल अछि ।

बालक के 'ग' रूप देखि,
सबहक मन बिहूँसति अछि ।
ओहि नेना के भाग्य देखन छैक,
ईश्वरे टा जनैत छथि ।
बालक के सौभाग्य देखि कय,
हमरो मन हुलसति अछि ।
किञ्चित एहि पापिन के,
बास कतय भेटैत अछि ।

क्षमा-याचना

सखेद लिखै पड़ैछ जे दिसम्बर अंकमे श्रीराधाकृष्णजीक अपूर्व रिपोर्ताज,
'ब्रह्मानन्द'क किछु अंशक स्थानमे एहि मासक 'काशक फूल'क अंश प्रेसक
असावधानीसँ छपि गेलैक । लेखक महोदय ओ पाठकगण लग
क्षमा - प्रार्थी छी ।

श्रीकृष्णकान्तमिश्र,
मंत्री, वैदेही समिति, दरभंगा



स्वागत-गीत

बितल तमी, नभ उदित प्रभात ।
सिहकय लागल मलय-बसात ॥
दिश-दिश विकसित चर-अरविन्द ।
भहरय स्वागत मधु-मकरन्द ॥
कविकोकिल कूजथु पुनि आबि ।
ऋतुपति अपनहि उपगत, भाबि ॥
जनमन गुंजित मधुकर पुंज ।
विकसित 'वैदेही'क निकुंज ॥
साधन नहि, स्वागतक विधान ।
निधि अंजलि, रवि दीपक दान ॥

—(वैदेही-समिति द्वारा)

परम्परा-परिचय

रावण-वध महाकाव्य : पण्डितश्रीजीवनाथभा, नेपाल राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, जनकपुरधाम, पो० जयनगर, (दरभंगा) पृ० ८०, मूल्य १॥)

मिथिला-भाषा-साहित्यमे महाकाव्य-रचनाक परम्परा कोनो नवीन नहि थीक । एहि भाषामे सभ रूपक महाकाव्य अछि । किछुतँ मूल संस्कृत महाकाव्य अनुबाद मात्र थीक एवं किछु मौलिक महाकाव्य सेहो अछि । दुहुक उदाहरण-स्वरूप अच्युतानन्ददत्तक महाभारत एवं रघुवंश, जीवछामिश्रक अपूर्व रामायण, परमानन्ददत्तक हरिवंश, लक्ष्मीनाथभाक नैषध, यदुनन्दनदासक कुमारसम्भव, कवीश्वरचन्दाभाक रामायण, लालदासक रामायण, कवि-शेखरपण्डित बदरीनाथभाक एकावली-परिणय ओ स्व० रघुनन्दनदासक सुभद्राहरण हमरा सभकेँ दृष्टिगोचर होइछ । अत्यन्त हर्षक विषय थीक जे गत वर्ष कविवर सीतारामभाक 'अम्ब चरित्र' एवं पण्डित जीवनाथभाक 'रावण-वध' नामक महाकाव्यद्वय प्रकाशित भेल अछि । ई मैथिलीक शुभ भविष्यक संकेत थीक ।

एक सकल महाकाव्यमे जाहि गुण सभहिक अपेक्षा रहैत छैक ताहि गुण सभसँ जीवनाथबाबूक 'रावण-वध'युक्त अछि । महाकाव्यक आधार पौराणिक किम्बा ऐतिहासिक होएवाक चाही तहिना एहि महाकाव्यमे आध्यात्म रामायणानुसार सुग्रीवसँ मित्रता भेलाक पश्चात् दूत-प्रेषणासँ लऽ रावणक वध पर्यन्त मात्र कथिक समवेश नामानुगुण अछि । कोनो महाकाव्यक नायक धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशान्त, एवं धीरोद्धतमेसँ उत्तम गुण सम्पन्न होएवाक थोक आओर एहि महाकाव्यक नायक रामचन्द्रजी धीरोदात्त उत्तम नायक थिकाह । सूर्य, चन्द्रमा, रजनी, प्रदोष, शैत्य, नीति, व्यूह, ऋतु-परिवर्तनक वर्णन, नयोरसक समावेश, सभ अलङ्कार एवं सूक्तिक यथासाध्य

योग तथा सर्गवद्धता प्रत्येक महाकाव्यक आवश्यक वस्तु मानल जाइछ । रावण-वधमे यथा स्थान ओ सभटा भेटल । एहि महाकाव्यमे वीर-प्रज्ञा थीक एवं अन्य रस सभ अङ्ग । एहि युगमे केहेन महाकाव्य चाही ? ई बेस परिचायक थीक । थोड़ ओ सोमित समयमे विशेष ज्ञान लाभ

करब एहि युगक विशेषता थीक। लोककेँ बृहद्काव्य महाकाव्य पढ़वाक समय नहि भेटैत छैकतेँ ओ थोड़ समयमे समस्त भेनिहार विषयकेँ विशेष ध्यानसँ देखैत अछि। इण्ड कारण थीक जे महाकाव्य दिशि लोकक अभिरुचि नहि जाए रहल छैक। परञ्च जीवनाथबाबू एहि विषयकेँ ध्यानमे रखैत एहि तघुकाय महाकाव्यक रचना कएल अछि। युगक अनुरूप एवं समयक प्रभाव देखि कए एकरा सफल महाकाव्य कतोक अंश धरि मानि सकैत छी। यद्यपि आधुनिक युगक काव्य अथवा महाकाव्यक रचनामे प्राचीन परम्परा (परिपाटी)क अनुसरणक आवश्यकता नहि बुझल जाइछ। परञ्च जीवनाथबाबू ओहि लक्षण ग्रन्थमे निर्धारित प्राचीन परम्पराकेँ नहि त्याग कएलन्हि अछि। एहि युगक महाकाव्यक नायक चिर उपेक्षित एवं दलित मानव होइत छथि एवं हुनका लोकनिक जीवन-घटना ओकर आधार रहैत छैक—से सत्य, किन्तु प्राचीन ढंगक परम्परावादी महाकाव्यहुक महत्व ताहिमेँ छल्प नहि भेलैक अछि कारण जे ओहिमे 'सत्यं-शिवं-सुन्दरम्'क अपूर्व समावेश छैक।

जीवनाथ बाबूक एहि रावण-वध महाकाव्यमे पाठक प्राचीन परम्परागत संस्कार एवं आधुनिक रूपक अपूर्व समन्वय देखैत छथि। एक विषय आओर ! एहि महाकाव्यगत शब्दक प्रयोगमे रचयिता विशेष उदार देखना जाइत छथि कारण जे कतिपय स्थान पर उपलब्ध तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्दक प्रयोग नहि कए विदेशज शब्द सभहिक व्यवहार कएल अछि। रावण-वध-महाकाव्यकेँ पढ़वाक काल आदिसँ अन्त धरि पाठक वर्गकेँ उत्सुता बनले रहैत छैन्हि जे एकर सभसँ महत्वपूर्ण गुण थीक। भाषा—परिमार्जित एवं अभिव्यक्ति प्रौढ़ सङ्गहि सङ्ग कवित्वपूर्ण अछि। नयनाभिराम आवरणसँ युक्त प्राचीन कथाक आधारपर नवीन रूपमे मैथिलीक एक लब्धप्रतिष्ठ कवि द्वारा रचित ई महाकाव्य सहृदय-सम्बेद्य अछि।

—श्रीपरमेश्वरमिश्र, हजारी

मैथिलीक नवीनतम प्रकाशन

खगेन्द्रनाथ-मजुमदार, विद्यापति, १०० पृ०, ड० काउन	१५)
महाकवि लालदास, मिथिला रामायण, ४०० पृ०, डिमाइ	५१)
वैद्यनाथमिश्र 'यात्री' नवतुरिआ, १३५ पृ०, काउन, मौलिक उपन्यास	१)
शेखर, व्यास, नन्दन, राधाकृष्ण, चारि आना कैश्वा, ३२ पृ०, डिमाइ, गल्प-संग्रह	१)
डा० श्रीकीर्त्यानन्दकुमार, प्रतिबिम्ब, १२५ पृ०, काउन, अनूदित कथा-संग्रह	१)
विभिन्न लेखक, विवेचना, ६४ पृ०, डिमाइ, आलोचना [श्री 'शेखर' सम्पादित]	१)
श्रीरमानाथभा, मिथिलाभाषा प्रकाश, काउन, रचना	२)
श्रीसुन्दरभाशास्त्री शृंगार - तिलक, २८ पृ०, काउन, पद्य	१)
श्रीवदरीनाथभा, मैथिली - गीति - रत्नावली, काउन, पद्य - संग्रह	१॥)
श्रीराधवाचार्य, क्रान्ति - गीत, ५६ पृ०, काउन, कविता संग्रह	॥)
श्रीनगेन्द्रकुमार, दृष्टिकोण, काउन, कथा	१)
श्रीकृष्णकान्तमिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, ३७२ पृ०, ड० काउन	५६)
श्रीईशानाथभा, गद्य-चन्द्रिका, १२४ पृ०, ड० काउन, गद्य	२)
श्रीरमानाथभा, कविता-कुसुम, १०४ पृ०, ड० काउन,	११)
श्रीशंकरभा, गीति-माला, ३२ पृ० ड० काउन,	१=)
श्रीलक्ष्मीपतिसिंह, मैथिली कुसुमाञ्जलि, १२४ पृ० ड० काउन संग्रह	१॥)
म०म०डा० श्रीउमेशमिश्र, मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता, दू भाग	२)
श्रीनगेन्द्रकुमार, शिकार, ड० काउन, ७२ पृ०, कथा,	१)
श्रीनगेन्द्रकुमार, फलेना जामुन, ६८ पृ०, ड० काउन, कथा	॥१)
श्रीसीतारामभा, अम्ब-चरित, काउन, १९६ पृ०, महाकाव्य	१॥)
श्रीरामचरित्रपाण्डेय, नक्षत्र, काउन, ८४ पृ०, कविता-संग्रह	११)
श्रीजीवनाथभा, रावणवध, काउन, महाकाव्य	१॥)
श्रीमतिनार्यामिश्र, ठहक्का, काउन, पृ०, १२ हास्य-रस	१)
श्रीसुधांशु शेखर चौधरी, मैथिली-साहित्य-सुमन काउन, १६०, संग्रह	॥३=)
श्रीतन्त्रनाथभा, हितोपदेश-सार, काउन, कथा	॥३=)

बिना अग्रिम एडवान्सकेँ वी० पी० पी० नहि जाइछ ।
प्राप्ति-स्थान : मंत्री ; वैदेही समिति, लालबाग, दरभंगा